## इस्लामिक धर्म का सबसे महत्वपूर्ण पर्व है ईद-उल-फितर

**ईद-उल-फितर इस्लाम के सबसे बड़े त्योहारों में से एक है। पूरे एक महीने तक रोजे रखने के बाद ईद बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती है। इस पर्व को मीठी ईद के रूप में भी मनाया जाता है। इस्लामिक कैलेंडर के अनुसार यह पर्व हर साल 10वें शव्वाल के पहले दिन मनाया जाता है।**

ईद-उल-फितर इस्लामिक धर्म का सबसे महत्वपूर्ण पर्व है। इसे मीठी ईद के रूप में भी जाना जाता है। वहीं, यह दिन रमजान के पवित्र महीने के अंत का भी प्रतीक है। यह इस्लामिक कैलेंडर की पहली तारीख को पड़ता है। इस पवित्र दिन लोग अपना रोजा समाप्त करके ईद मनाते हैं और अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हैं, नए कपड़े पहनते हैं, भव्य दावतें तैयार करते हैं। साथ ही अपने प्रियजनों से मिलने के लिए जाते हैं। कहा जाता है कि इस शुभ अवसर पर दान करने का भी अपना एक खास महत्व है।

### ईद-उल-फितर 2025

ईद मनाने की वास्तविक तारीख चंद्रमा के दर्शन पर निर्भर करती है। चंद्रमा का दर्शन इस्लामी कैलेंडर के अनुसार होता है और चंद्रमा के वास्तविक दर्शन की प्रतीक्षा की जाती है।

### ईद-उल-फितर कैसे मनाएं

- सबसे पहले लोग पवित्र स्नान करते हैं।
- ईद के दिन सुबह नमाज पढ़ना बहुत जरूरी होता है।
- नमाज अदा करने के बाद लोग एक-दूसरे से गले मिलते हैं और ईद मुबारक की शुभकामनाएं देते हैं।
- महिलाएं घरों में ढेर सारे सूखे मेवों से मिठाइयां-सेवइयां बनाती हैं।
- इस अवसर पर लोग नए कपड़े पहनते हैं और नमाज के लिए मस्जिद जाते हैं।
- घर वापस आकर वे उस मीठे पकवान को खाते हैं और रिश्तेदारों और दोस्तों में भी बांटते हैं।
- इस दिन जरूरतमंदों को भोजन कराना उन्हें पैसे और कपड़े देना शुभ माना जाता है।
- इस दिन अल्लाह को खुश करने के लिए एक बुरी आदत का भी त्याग किया जाता है।

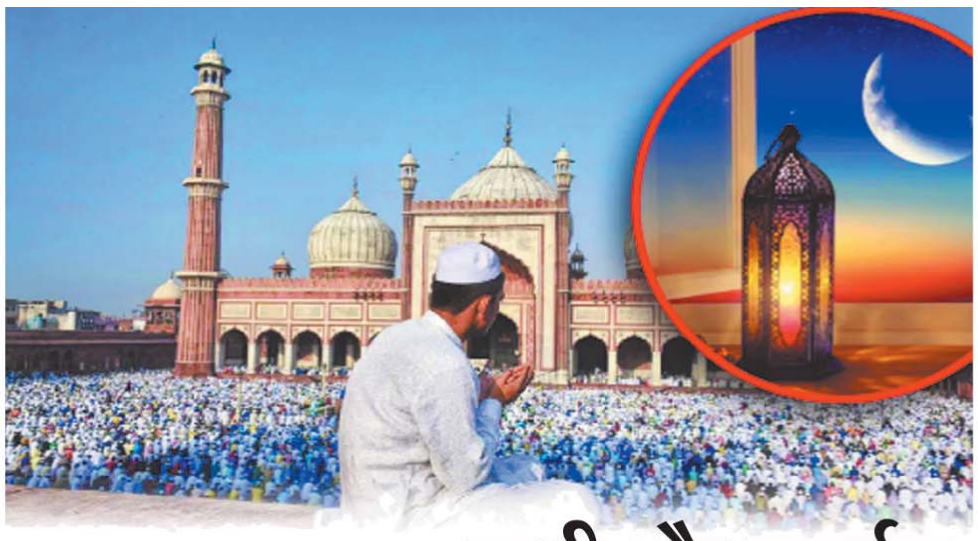

# खुशी और समर्पण के साथ मनाया जाएगा ईद-उल-फितर

रमजान इस्लामिक कैलेंडर का नौवां महीना होता है। इसे माह-ए-रमजान भी कहा जाता है। मुस्लिम समुदाय के लोग रमजान के महीने में रोजा रखते हैं। रोजा के दौरान लोग सहरी करने के लिए सुबह सूर्योदय से पहले उठते हैं और शाम को इफ्तार साथ अपना उपवास तोड़ते हैं। यानी इस पूरे महीने में मुसलमान लोग सूरज निकलने से लेकर डूबने तक कुछ भी नहीं खाते पीते हैं। साथ में महीने भर इबादत करते हैं और अपने गुनाहों की माफी मांगते हैं। एक महीने तक रोजा रखने के बाद ईद-उल-फितर यानी ईद मनाई जाती है। पूरे महीने भर रोजा रखने के बाद ईद के इंतजार की खुशी अलग ही होती है। हालांकि ईद मनाने की तारीख चांद दिखने के हिसाब से ही मुकम्मल की जाती है। जिस दिन चांद दिखता है, उस दिन को चांद मुबारक कहा जाता है और ईद मनाई जाती है। सऊदी अरब में सबसे पहले ईद की तारीख का एलान किया जाता है।

### ईद-उल-फितर कब है?

इस्लामिक कैलेंडर के अनुसार ईद 10वें शव्वाल (महीने) की पहली तारीख को मनाई जाती है लेकिन इस्लाम धर्म को मानने वाले लोग अपना त्योहार चांद को देखकर मनाते हैं। ऐसे में ईद का चांद नजर आने के बाद ही ईद-उल-फितर की सही तारीख मुकर्रर की जाएगी। फिलहाल 31 मार्च या 1 अप्रैल को ईद का त्योहार मनाए जाने की उम्मीद है।

### ईद-उल-फितर का महत्व

इस्लाम धर्म को मानने वाले लोगों के लिए ईद का त्योहार बेहद खास होता है। ये अल्लाह का शुक्रिया अदा करने का दिन होता है। मुस्लिम समुदाय के लोग खुशी और जश्न के साथ ईद मनाते हैं। ईद-उल-फितर को छोटी ईद और मीठी ईद भी कहा जाता है। इस्लामिक कैलेंडर में रमजान का महीना नौवां महीना होता है। वहीं दसवां महीना शव्वाल है। शव्वाल के पहले दिन दुनिया भर में ईद-उल-फितर यानी ईद मनाई जाती है। शव्वाल का अर्थ है, उपवास तोड़ने का त्योहार। इस दिन एक महीने तक रोजा रखने के बाद लोग उपवास तोड़ते हैं और त्योहार का जश्न मनाते हैं।

### इस तरह मनाते हैं ईद

ईद-उल-फितर के दिन सुबह सबसे पहले नमाज अदा की जाती है। इसके बाद खजूर या कुछ मीठा खा कर रोजा समाप्त किया जाता है। इस दिन लोग नए कपड़े पहनकर मस्जिद में नमाज अदा करने जाते हैं। साथ ही एक दूसरे से गले मिलकर खुशियां जाहिर करते हैं। सभी रिश्तेदार और दोस्त एक दूसरे के घर दावत पर जाते हैं और ईद की मुबारकबाद देते हैं। साथ ही घरों में तरह-तरह के व्यंजन बनाए जाते हैं। इस दिन मीठी सेवइयां खाई जाती हैं और बच्चों को ईदी भी दी जाती है।

### ईद-उल-फितर का इतिहास

मान्यता है कि सबसे पहली ईद सन् 624 ईस्वी में पैगंबर मुहम्मद ने मनाई थी। इस दिन पैगंबर हजरत मुहम्मद साहब ने बद्र के युद्ध में जीत हासिल की थी। इस खुशी में ईद मनाई जाती है। मोहम्मद साहब ने कुरान में दो पवित्र दिन को ईद के लिए निर्धारित किया था। इस तरह से साल में दो बार ईद मनाई जाती है, जिसे ईद-उल-फितर और ईद-उल-अजहा के मान से जाना जाता है। इस्लामिक प्रथा के अनुसार ईद की नमाज अदा करने से पहले हर मुस्लिम व्यक्ति को दान देना जरूरी होता है।

## खुदा का इनाम है ईद-उल फितर

रमजान माह की इबादतों और रोजे के बाद जलवा अफरोज हुआ ईद-उल फितर का त्योहार खुदा का इनाम है, मुसर्रतों का आगाज है, खुशखबरी की महक है, खुशियों का गुलदस्ता है, मुस्कुराहटों का मौसम है, रौनक का जश्न है। इसलिए ईद का चांद नजर आते ही माहौल में एक गजब का उल्लास छा जाता है। ईद के दिन सिवइयों या शीर-खुरमे से मुंह मीठा करने के बाद छोटे-बड़े, अपने-पराए, दोस्त-दुश्मन गले मिलते हैं तो चारों तरफ मोहब्बत ही मोहब्बत नजर आती है। एक पवित्र खुशी से दमकते सभी चेहरे इंसानियत का पैगाम माहौल में फैला देते हैं। अल्लाह से दुआएं मांगते व रमजान के रोजे और इबादत की हिम्मत के लिए खुदा का शुक्र अदा करते हाथ हर तरफ दिखाई पड़ते हैं और यह उत्साह बयान करता है कि लो ईद आ गई। कुरआन के अनुसार पैगंबरे इस्लाम ने कहा है कि जब अहले ईमान रमजान के पवित्र महीने के एहतेरामों से फारिग हो जाते हैं और रोजों-नमाजों तथा उसके तमाम कामों को पूरा कर लेते हैं, तो अल्लाह एक दिन अपने उक्त इबादत करने वाले बंदों को बख्शीश व इनाम से नवाजता है। इसलिए इस दिन को ईद कहते हैं और इसी बख्शीश व इनाम के दिन को ईद-उल फितर का नाम देते हैं। रमजान इस्लामी कैलेंडर का नौवां महीना है। इस पूरे माह में रोजे रखे जाते हैं। इस महीने के खत्म होते ही दसवां माह शव्वाल शुरू होता है। इस माह की पहली चांद रात ईद की चांद रात होती है। इस रात का इंतजार वर्ष भर खास वजह से होता है, क्योंकि इस रात को दिखने वाले चांद से ही इस्लाम के बड़े त्योहार ईद-उल फितर का ऐलान होता है। इस तरह से यह चांद ईद का पैगाम लेकर आता है। इस चांद रात को अल्फा कहा जाता है। रमजान माह के रोजे को एक फर्ज करार दिया गया है, ताकि इंसानों को भूख-प्यास का महत्व पता चले। भौतिक वासनाएं और लालच इंसान के वजूद से जुदा हो जाए और इंसान कुरआन के अनुसार अपने को ढाल लें। इसलिए रमजान का महीना इंसान को अशरफ और आला बनाने का मौसम है। पर अगर कोई सिर्फ अल्लाह की ही इबादत करे और उसके बंदों से मोहब्बत करने व उनकी मदद करने से हाथ खींचे तो ऐसी इबादत को इस्लाम ने खारिज किया है। क्योंकि असल में इस्लाम का पैगाम है- अगर अल्लाह की सच्ची इबादत करनी है तो उसके सभी बंदों से प्यार करो और हमेशा सबके मददगार बनो। यह इबादत ही सही इबादत है।

# भाईचारे का संदेश देता है ईद का त्योहार

**रमजान के बाद ही ईद-उल-फितर का त्योहार आता है, जो इस्लाम धर्म का एक पावन पर्व है। इस्लामिक कैलेंडर के अनुसार, रमजान के बाद 10वें शव्वाल की पहली तारीख को ईद-उल-फितर का त्योहार मनाया जाता है। ईद कब मनायी जाएगी यह चांद के दीदार से तय होती है।**

ईद का त्योहार चांद को देखकर निश्चित होता है। चांद के दीदार के बाद ईद-उल-फितर पर्व 31 मार्च या 1 अप्रैल को है। ईद-उल-फितर को मीठी ईद के नाम से भी जाना जाता है। इसमें मीठे पकवान (खासतौर पर सेंवई) बनते हैं। लोग आपस में गले मिलकर अपने गिले-शिकवों को दूर करते हैं। घर आए मेहमानों की विदाई कुछ उपहार देकर की जाती है। इस्लामिक धर्म का यह त्योहार भाईचारे का संदेश देता है। ईद उल फितर के दिन लोग सुबह नए कपड़े पहनकर नमाज अदा करते हुए अमन और चैन की दुआ मांगते हैं। ईद उल फितर के मौके पर लोग खुदा का शुक्रिया इसलिए करते हैं क्योंकि अल्लाह उन्हें महीने भर उपवास पर रहने की ताकत देते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि रमजान के पवित्र महीने में दान करने से उसका फल दोगुना मिलता है। ऐसे में लोग गरीब और जरूरतमंदों के लिए कुछ रकम दान कर देते हैं। रमजान महीने में रोजा रखने का मतलब होता है कि लोगों को भूख प्यास का एहसास हो सके। इस दिन कई तरह के पकवान घर में बनाएं जाते हैं।

### चांद के दीदार के बाद मनाई जाती है भारत में ईद

इस ईद को मीठी ईद के नाम से भी जाना जाता है। ईद को पूरी दुनिया में पूरे धूम से मनाया जाता है। लोग इस दिन घरों में मीठे पकवान बनाते हैं। खासकर सेंवईयां जरूर बनती है। लोग एक-दूसरे से गले मिलकर शिकवें दूर करते हैं। इस्लाम धर्म में ये त्योहार भाईचाहे का संदेश देता है। इस दिन मुस्लिम समुदाय के लोग नए कपड़े पहनकर नमाज अदा करते हैं और अपने परिवार के अमन चैन की दुआ करते हैं। इस दिन पढ़ी जाने वाली नमाज को सलात अल फज्र कहा जाता है। वहीं ईद से पहले हर मुसलमान के लिए फितरा देना फर्ज बताया गया है।

### गरीब भी मना सकें खुशियां

ईद से पहले हर इंसान को लगभगव पौने दो किलो अनाज या उसकी कीमत गरीबों को दी जाती है। जिससे गरीब व्यक्ति भी ईद की खुशी मना सकें। बताया जाता है कि इसी दिन पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब ने बद्र के युद्ध में फतह हासिल की थी। इसी युद्ध में फतह पाने की खुशी में लोग ईद को मनाते हैं।

### दी जाती है बक्शीश

रमजान के महीने में रोजे रखने के बाद अल्लाह के इस दिन पर बक्शीश और ईनाम दिया जाता है। इसलिए इस दिन को ईद कहते हैं। मुसलमान ईद में खुदा का शुक्रिया अदा करते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि खुदा ने महीने भर के उपवास रखने की ताकत दी।

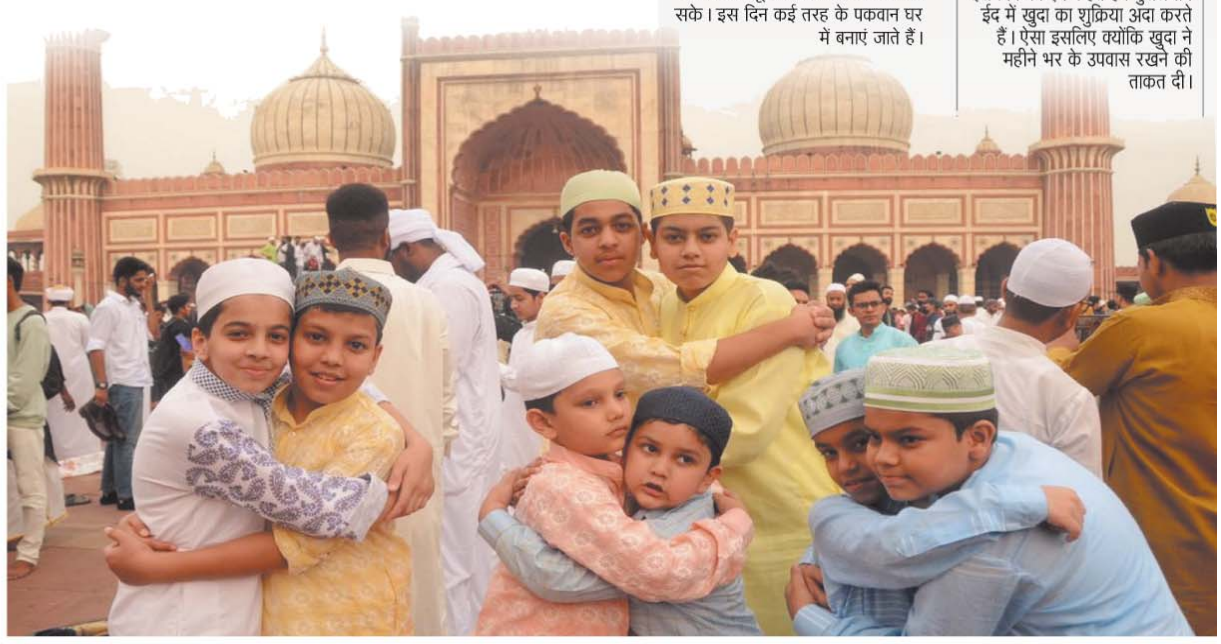

ईद-उल-फितर, जिसे रोजा खोलने के त्योहार के रूप में भी जाना जाता है, एक खुशी का अवसर है जो रोजे के महीने रमजान के खत्म होने पर मनाया जाता है. ईद-उल-फितर को दक्षिण एशियाई देशों में इस त्योहार को मीठी ईद के नाम से भी जाना जाता है. ईद-उल-फितर पर बनाएं ये 5 पारंपरिक व्यंजन -

# ईद पर जरूर बनाएं ये स्पेशल व्यंजन

## इनके बिना अधूरा है जश्न

### शीर खुरमा

शीर खुरमा, जिसका फ़ारसी में अर्थ है दूध और खजूर, एक समृद्ध सेंवई का हलवा है जिसे खजूर, सूखे मेवे और केसर से सजाया जाता है. यह मलाईदार डिश ईद के दौरान मुस्लिम घरों में जरूर बनाया जाता है.

### सेवइया

सेवइयां, एक सर्वोत्कृष्ट ईद की मिठाई है, जिसमें दूध, खोया और सूखे मेवों में पकाई गई घी में भुनी हुई सेवइयां शामिल हैं. यह खाने में बेहद स्वादिष्ट लगती है.

### गुलाब शरबत

फ्रेश और सुगंधित, गुलाब शरबत एक लोकप्रिय ईद का ड्रिंक है जो उत्सव की दावत के लिए तैयार किया जाता है. गुलाब की पंखुड़ियों और घर का बना गुलाब सिरप इस ड्रिंक को और स्वादिष्ट बना देता है.

### मटन शामी कबाब

कोई भी ईद की दावत रसीले कबाब के बिना पूरी नहीं होती है और मटन शामी कबाब इसमें बिल्कुल फिट बैठता है. कीमा मटन और सुगंधित मसालों के साथ तैयार किया जाता है.

### बिरयानी

बिरयानी बनाने के लिए खिले चावलों में मीट और कई मसालों को मिलाकर तैयार किया जाता है. ये खाने में स्वादिष्ट और इस त्योहार का खास डिश में से एक होती है.